नाटक

एक रानी की कहानी

अनुवादक:
श्याम जुनेजा

एक रानी की कहानी

लेखक:

मखनलाल सराफ़

प्रकाशित कर्ता : कृष्णा प्रकाशन
जे-2/254, दुर्गा नगर -2
जम्मू - 180013
मो. : 94191-18344

अनुवादक : श्याम जुनेजा

मुद्रित : जंडियाल प्रिन्टिग प्रैस
महिन्द्र नगर, केनाल रोड़
जम्मू
दूरभाष : 2553140

मुल्य : 60/=

पात्र परिचय

महाराज दशरथ.

मंत्री सुमंत्र

महारानी कौशल्या

रानी कैकयी

रानी सुमित्रा

राजकुमार भरत

राजकुमार शत्रुघ्न

दादा

दादी

अँधा बूढा

नर्तक व नर्तकी

सूचक

ढिंढोरची

सूत्रधार / उदघोषक

निवेदन: इस नाटक को केवल कला की एक रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में देखा और पढ़ा जाए ! नाटककार ने इस नाटक को अपने मानस के मंच पर खेले जाते हुए देखा है. वहाँ उसे उन सभी चरित्रों के दुःख और आक्रोश में सहभागी होना पड़ा है. इन सभी चरित्रों के दुःख और संताप में सहभागिता ने उसे इस त्रासदी के विभिन्न पक्षों को देखने का अवसर दिया. इस नाटक के अलग-अलग चरित्र, यद्यपि महलों के वासी हैं फिर भी एक अलग प्रकार की विपन्नता से आक्रान्त जीवन व्यतीत करते हैं. राजकीय सुविधाओं के बावजूद इन चरित्रों का निजी जीवन, साधारण व्यक्ति के जीवन से भिन्न और ऊपर नहीं है. क्योंकि, जीवन के सुख और दुःख, राजा और प्रजा में अंतर नहीं करते. मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं का जीवन पर प्रभाव महलों में रहने वाले लोगों और साधारण व्यक्तियों पर एक जैसा होता है. अंतर यदि है तो केवल अभिव्यक्ति का है. अभिव्यक्ति के इसी अंतर को आप तक लाने का छोटा सा प्रयास है, नाटककार मखनलाल सराफ के उर्दू नाटक – "एक रानी की कहानी " का श्यामबिहारी जुनेजा द्वारा हिन्दी में यह अनुवाद.

****

(प्रेक्षा-गृह में दर्शक बैठे हैं. पर्दा उठने की प्रतीक्षा है मन्च के बाहर दायीं दीवार पर एक बड़ी दीवार-घड़ी में ५.३ बज रहे हैं. दीवार-घड़ी से टनन्न की ध्वनि आती है, इसी के साथ भीतर से उदघोषक, नाटक के बारे में परिचय देता है)

उदघोषक: लीजिये प्रस्तुत है नाटक, एक रानी की गाथा

(इसके साथ ही प्रेक्षागृह में अँधेरा कर दिया जाता है)

(धीरे-धीरे पर्दा उठने लगता है. पर्दा उठने के साथ-साथ ढोल की ध्वनि और उसके साथ पाठ-पूजा, आरती, अर्चना और मन्त्रों के उच्चारण की ध्वनियों द्‌वारा एक शोकाकुल प्रभाव उत्पन्न करते हुए पूरा पर्दा खुल जाता है—मध्यम प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ जाता है और रौद्रमुद्रा में नृत्य करते हुए एक नर्तक प्रगट होता है. यह नृत्य एक बड़ी उदास करने वाली संताप ग्रस्त परिस्थिति की देन है. इसी नृत्य के बीच, राज्य के ढिंढोरची की ध्वनि नेपथ्य में सुनाई देती है.)

दृश्य १

राज ढिंढोरची: सुनो सुनो सावधान होकर सुनो !

अयोध्या के प्रधान आमात्य की ओर से प्रजा को सूचित किया जाता है कि महाराज दशरथ की दैहिक स्थति के साथ-साथ उनकी मानसिक अवस्था भी बिगडती जा रही है. प्रजा से निवेदन है की वह महाराज के स्वास्थ्यलाभ के लिए प्रार्थना करे..सावधान सुनो सुनो सुनो

(ध्वनि दूर हो जाती है, नृत्य की गूँज, नर्तक की लय के साथ-साथ बढ़ जाती है, धीरे-धीरे प्रकाश कम से कम होने लगता है. और नर्तक दृष्टि से ओझल हो जाता है)

दृश्य २.

(दृश्य एक और दृश्य दो के बीच देवसंगीत के स्वर नेपथ्य में उभरते है. मंच पर मध्यम प्रकाश के आदुःख न के साथ-साथ नाटक के पात्र अलग-अलग नाटकीय परिधान में सुसज्जित दिखाई देते हैं. मंच पर प्रकाश के तेज़ होने के साथ, संगीत की हृदय स्पर्शी धुन सुनने को मिलती है दो नर्तकियां मंच पर एक प्रभावी नृत्य-मुद्रा में आती है. प्रत्येक पात्र के पास जाकर उसका अभिवादन

करती हैं. इस प्रकार उनकी कला व नाटक की सफलता की कामना करती हैं. प्रकाश धीरे-धीरे कम होने के साथ-साथ, सभी पात्र मंच से बाहर हो जाते हैं. अगला दृश्य शुरू होता है)

दृश्य ३.

(राजभवन का एक कक्ष, नेपथ्य में संगीत की एक हृदय-विदारक स्वर-लहरी..महाराज दशरथ भग्न-चित्त अवस्था में मंच पर आते हैं)

महाराज दशरथ: राम! ... हे राम !

(राम को बनवास भेजने के दुःख ने उन्हें दैहिक रूप से भी निढाल और शिथल कर दिया है)

राम ... मेरे लाल अब किसके लिए और किसके आश्रय में जियूं और क्यों जियूं ..

(रोते है) हे ईश्वर मुझे उठा ले... मुझे इस दुर्गति से मुक्ति दे, मैं एक दुष्ट शासक हूँ जिसने अपने ही हाथों अयोध्या के स्वर्णिम भविष्य को धूमिल किया है ... मैं पापी हूँ . अपराधी हूँ मैंने रघुवंश के वैभव को ध्वस्त कर दिया है. मेरे भगवान.. मुझे मार दो.. यह पतित राजा तुमसे मृत्यु की भिक्षा मांग रहा है.

(चिल्लाते है) मर जाने दो मुझे .. मर जाने दो

(विलाप सुन कर भीतर से रघुवंश के विश्वस्त मंत्री सुमन्त्र जो कभी-कभी आवश्यकतानुसार सारथी के

दायित्व का निर्वाह भी करते हैं मंच पर आते है और महाराजा दशरथ को सम्भालते हुए बोलते है)

सुमन्त्र: (महाराज की अवस्था देखकर घबराते हुए)

महाराज धीरज धरिये, युवराज राम अब बनवास पूरा होने के पश्चात ही लौटेंगे, समय व्यतीत होने में क्या लगता है महाराज ।

दशरथ: बस सुमन्त्र बस.. हम वनवास के बारे में कुछ नहीं जानना चाहते ... (फिर राम याद आते है) हे राम ।

हम जानते हैं प्राणत्याग करते समय हमें किस कष्ट से सामना है. हमारे साथ हमारी कोई सन्तान नहीं होगी जो अंतिम सांस के समय हमारे मुंह में गंगाजल डाल कर हमारी तृषा को शांत कर सके... हम राम का नाम ले सकें.

सुमन्त्र: महाराज हम आपकी दीर्घ आयु की कामना करते हैं

दशरथ: आपने तो हमारे पिता की भी दीर्घ आयु की कामना की थी पर जो होना है वह निश्चित है. हम यह सब जानते हैं।

सुमन्त्र: महाराज आपके समक्ष हमारी क्या योग्यता, आयु में आपसे बड़े अवश्य हैं, लेकिन, हैं तो आपके सेवक, एक मंत्री और सारथि ही ।

महाराज दशरथ: आप कहना क्या चाहते हो ?

सुमन्त्र: महाराज

महाराज दशरथ: हाँ हाँ कहिये !

सुमन्त्र: रानी कैकयी को दिए वचन को पूरा करके आपने अयोध्या वासियों के लिए दुर्दिनों को आमंत्रित कर लिया है महाराज. आपने प्रजा को उसके प्रिय युवराज से वंचित कर दिया है.

महाराज दशरथ: सुमन्त्र हम अयोध्या वासियों को भली भान्ति जानते हैं. उनकी प्रकृति और स्वभाव से परिचित हैं. हमारी प्रजा भी अच्छे से जानती कि हम रघुवंशी हैं, जो कहते हैं सो करते हैं। दिए गये वचन का निर्वाह तो हम किसी भी स्थिति में करते हैं । यह हमारा नैतिक कर्तव्य है ...लेकिन !!

सुमन्त्र: लेकिन क्या राजन

दशरथ: हम केवल अयोध्या-नरेश ही नहीं हैं.. हमारे भीतर एक पिता ह्रदय भी हैं. युवराज को बनवास की आज्ञा देने की विवशता ने हमारे ह्रदय को विदीर्ण का दिया है. हम रक्त के आंसू पी रहे हैं सुमन्त्र

सुमन्त्र: विदित है महाराज ।.

महाराज दशरथ: यदि सब विदित है तो राजभवन में इतना सन्नाटा क्यों ?

सुमन्त्र: क्योंकि, ठीक राज्य-अभिषेक के अवसर पर महारानी कैकयी द्‌वारा वचन पूर्ती का आग्रह, और उस पर आपकी स्वीकृति, किसी भूकम्प से कम नहीं थे महाराज. राजभवन के सारे लोग काँप उठे हैं. अयोध्या की प्रजा स्वयम को निराश्रित, असुरक्षित अनुभव कर रही है. राजकुमार राम में अयोध्या की प्रजा अपने भावी नरेश को देख रही थी. राम-राज्य की कामना कर रही थी. और.. रानी कैकयी के इस अशुभ आचरण ने लोगों के दिलों को ठेस पहुंचायी.

महाराज दशरथ: (जैसे सब याद आता है और राम नजरों के सामने आते हैं)

राम.. राम ...राम (चिल्लाते है) राम

सुमन्त्र: महाराज ! राम, लक्ष्मण और सीता अभी रामकोट ही पहुंचे हैं ।

महाराज दशरथ: राम ... राम

(चक्कर खा कर गिरने लगते है सुमन्त्र घबरा जाता है और भीतर बैठी रानियों को बुलाने की प्रयास करता है)..

सुमन्त्र: महारानी! महारानी कौशल्या.. महारानी माता कौशल्या !

(सारी रानियाँ मंच पर आती हैं, आराम से महाराज दशरथ को भीतर ले जाती हैं और इसी दृश्य के साथ ही प्रकाश विलीन हो जाता है)

दृश्य ४

(नेपथ्य में हृदय-विदारक स्वर-लहरी के साथ-साथ मंच धीरे-धीरे प्रकाशमान होता है, और साथ ही में दूर दिखाई देने वाली दो तरफा विंगों से क्रॉस लाईट में अर्थी का जलूस मंच पर दृष्टिगोचर होता है. अभिनेताओं की भाव-भंगिमा से अनुमान लगता है कि उनके कंधे पर महाराज दशरथ का मृत शरीर अंतिम-संस्कार के लिए शान्ति घाट लिया जा रहा है.. शोकाकुल स्वर-लहरी उभरती है जब जलूस दर्शकों की दृष्टि से ओझल हो जाता है. ओझल होने के साथ-साथ, महारानी कौशल्या, रानी सुमित्रा, रानी कैकयी मंच पर एक पंक्ति में आती है और दूर-दूर तक महाराज दशरथ के शोकसूचक जलूस को श्मशान घाट की ओर जाते हुए देख कर, बिना रोये वापस मुड कर भीतर चली जाती हैं. इस दुःख में एक नया उभार उत्पन्न होता है जो केवल नेपथ्य की स्वर-लहरी से दर्शकों तक पहुंचता है.. महारानी कौशल्या और रानी सुमित्रा भीतर चली जाती हैं और रानी कैकयी रुक-रुक कर दूर अर्थी को देखती रहती है और भीतर से पूरी तरह टूट कर रो पडती हैं और बोलती है)

रानी कैकयी: (रोते हुए)

हे विश्वात्मन, हे प्रभू ! मैं किन पापों का दंड भुगत रही हूँ. यदि, मेरे प्रारब्ध में तुमने ऐसा ही कठिन दंड लिखा है; तो केवल मैं ही भोगती, महारानी कौशल्या और रानी सुमित्रा नें कौन से पाप किये थे जो तुमनें उनके जीवन को भी अजीर्ण बना डाला. यदि मुझसे पाप हुए हैं, तो मैं दंड भुगतने के लिए तैयार हूँ... रघुवंश पर जो दुर्दिन आन पड़े हैं उसका केंद्र मैं हूँ.. केवल मैं (रोती है)

हा नाथ ! जीवन से मुंह मोड़ कर जिस तरह आप सदा-सदा के लिए हमारा साथ छोड़ कर चले गये उससे मैं व्यक्तिगत रूप से मैं लज्जित हो गयी हूँ. मैं अयोध्यावासियों के समक्ष खड़े होने के योग्य भी न रही.

हे ईश्वर, महाराज दशरथ को अपने दिए हुए वचनों का स्मरण कराना, और उन्हें पूरा करवाना उन्हीं के पक्ष में तो था

(भावुकता में विक्षिप्त सी हो जाती है)

हाँ हाँ... मैं रानी हूँ.. रानी.. रानी कैकयी (रोती है)

राजरानी हो कर मैं कैसे अपने पतिदेव का अंत की कामना कर सकती थी?. तीन सुहागनों का एक ही समय में विधवा हो जाना, रघुवंश की गाथा में हमेशा सुनने को मिलता रहेगा आनेवाली पीढ़ी को.. हाँ.. हाँ.. मैं ही हूँ अभागन

रानी कैकयी.. दुष्ट रानी कैकयी.. क्रूर रानी.. दुर्भाग्य की मारी कैकयी

(क्रन्दन करती है और रो-रो कर गिरने लगती है और इसी अंतराल में बाहर से ध्वनियाँ सुनाई देती हैं.. राजभवन के बाहर लोगों की भीड़ उमड़ आयी है और आक्रोश पूर्ण विरोध में नारे लगाती हुई)

ध्वनियाँ : क्रूर कैकयी तेरा नाश हो.. नाश हो । पापिन कैकयी..तेरा नाश हो.. नाश हो..दुष्ट कैकयी ...

(४-५ बार नारे लगने के बाद हल्की-हल्की ध्वनि नेपथ्य में जारी रहती है और यह ध्वनि सुनकर रानी कैकयी लाचार और निढाल हो जाती है. भवन के भीतर से रक्षक बाहर मंच पर आकर दूर-दूर तक देखते हैं और इनके बाद राजकुमार शत्रुघ्न मंच पर आकर रानी कैकयी को राज भवन के भीतर ले जाने का प्रयास करते है लेकिन रानी कैकयी भीतर जाने से इनकार करती है और कहती है)

रानी कैकयी: राजकुमार राजकुमार शत्रुघ्न ।

(अपना हाथ राजकुमार शत्रुघ्न के हाथ से वापस खींच लेती है)

मुझे छोड़ दो, मैं लोगों के सामने जाकर उनको उत्तर दूंगी. मैं प्रजा से पूछना चाहती हूँ, यदि, विधवा होने के अतिरिक्त भी मेरे लिए किसी दंड का प्रावधान है तो मैं भुगतने के लिए तैयार हूँ.

शत्रुघ्न : माता, अपने आप को सम्भालिये। राजमाताओं के लिए प्रजा के सामने इस प्रकार खड़ा होना राज्य की परम्पराओं के विरुद्ध है... जो हुआ सो हमारे भाग्य में था. आपका इसमें कोई दोष नहीं.

कैकयी:

(विक्षिप्त अवस्था में विंग के पास जाकर जैसे भवन के केन्द्रीय द्वार पर आकर लोगों से सम्बोधित होती है)

मेरे देशवासियों, अयोध्या में निवास करने वाले लोगो, आओ। राजभवन के भीतर आओ, और खींचकर इस कैकयी को बाहर ले जाओ, उसे पत्थरों से मार डालो.. अयोध्या के इतिहास के पन्नों पर मेरी गाथा लिख दो और इस बात का उल्लेख भी करो कि अयोध्या के लोगों ने रानी कैकयी को अपना पक्ष रखने का भी कोई अवसर नहीं दिया

(क्रन्दन करती है)

लिख दो अयोध्या के इतिहास में, सरयू के वक्ष से उठती लहरों पर अंकित कर दो रानी कैकयी की गाथा

(विलाप करती है)

शत्रुघ्न: (भावुक हो जाते है)

बस माता बस ..समय के पन्नों पर रघुवंश की गाथा अंकित हो गयी है. इस गाथा को लोग, आने वाले आयामों में पढ़ कर स्वयम ही निर्णय करेंगे कि आपका वचन माँगना उचित था या महाराज दशरथ का वचनपूर्ति का निर्वाह-धर्म

(धीरे-धीरे नारों की ध्वनियाँ धीमी हो जाती है, इसी के साथ मंच का प्रकाश भी कम हो जाता है और फिर पूरी तरह से अँधेरा छा जाता है)

दृश्य ५.

(मंच के प्रकाशित होते ही सुमन्त्र और उनके पीछे-पीछे राजकुमार शत्रुघ्न भीतर प्रवेश करते हैं और उनकी गति और भाव-भंगिमा से स्पष्ट होता है कि इनके बीच वार्तालाप कुछ देर से चला आ रहा है)

सुमन्त्र:

(जैसे पिछली बातचीत को जारी रखते हुए बोलते हैं)

मैं तात नहीं हूँ.. मैं पापी हूँ.. मुझे यह आशा नहीं थी कि इस ढलती आयु में रघुकुल का विनाश इन आँखों से देखूँगा.. मेरे ईश्वर ने मेरे भाग्य में क्या-क्या लिखा होगा मैं नहीं जानता. आयु के अनुसार महाराज दशरथ को मेरी अर्थी को कंधा देना था, लेकिन,,,, हा-दैव।

(रोता है)

मेरे भगवान मुझे ही अपने इन ढीले कंधों पर महाराजा दशरथ का मृत देह उठानी पड़ेगी, इसकी मुझे तनिक भी भनक न थी, रानी सुमित्रा के कुमार शत्रुघ्न को इस अल्प आयु में अपने पिता का अंतिम संस्कार करना पड़ेगा, मैंने ऐसा कभी सोचा भी न था. मेरे दाता मैं अयोध्या के इस राजभवन में ऐसा शोक-संताप देख भी नहीं सकता. मेरा हृदय फट कर तार-तार हो रहा है मैं इतनी पीड़ा इस बुढापे में सहन नहीं कर सकता (रोता है) महाराज दशरथ मुझे अपने पास बुला लो महाराज

(राजकुमार शत्रुघ्न उन्हें सम्भालने का प्रयास करते हैं)

शत्रुघ्न: ताता

(सुमन्त्र के गले लगकर रोते है)

यद्यपि, मैंने सबसे छोटा कुमार होने के नाते, अपने पिता महाराज दशरथ का अग्निसंस्कार किया है ..फिर भी, इस आयु में आपकी आँखों से यह अश्रुधारा मैं सहन नहीं कर सकता. हे तात..मेरे हृदय काँप रहा है..यदि आप ही इस प्रकार से मन हार बैठेंगे तो इस राज परिवार का क्या होगा तात।

(रोता है) आप माता कैकयी के पास जाकर थोड़ी देर बैठिये और वार्तालाप कीजिये

सुमन्त्र: मुझे रानी कैकयी से क्या वार्तालाप करना है भद्र?

(इसी समय रानी कैकयी बाहर मंच पर आती है और क्रोध में बोलती है)

रानी कैकयी: यही कि विधवा रानी कैकयी राजा दशरथ से माँगा हुआ वचन वापस ले...घोषित किया जाए कि कौशल्या नन्दन राम को बनवास से वापस बुलाया जाए

कौशल्या:

(मंच पर आते-आते ही बोलती है) यह घोषणा किसकी आज्ञा से की जा रही है ?

कैकयी: यह घोषणा भाग्य की मारी रानी कैकयी की और से की जाएगी.

कौशल्या: कदापि नहीं ! महाराज दशरथ की ज्येष्ठ राजरानी कौशल्या की अनुमति के बिना अयोध्या में कोई घोषणा नहीं होगी ! कोई राजाज्ञा नहीं होगी. रानी कैकयी को जो कुछ भी कहना है वो राजसभा में आकर कहें महाराज के सामने

कैकयी: महाराज के सामने (विक्षिप्त जैसी हो जाती है) महाराज... कहाँ हैं.. कहाँ हैं महाराज (विलाप करती है) महाराज.. महाराज ! (दायें बायें देखती है) महाराज.. महाराज

शत्रुघ्न (आगे आकर रानी कैकयी को सम्भालने का प्रयास करते हैं) माता यह क्या कर रही हैं आप, अपने आपको सम्भालिये और फिर बात कीजिये माता

कौशल्या: (माता के रूप में) कौन सी बात करनी है?

कैकयी: "कैकयी, महाराज दशरथ का दिया वचन लौटाती है" यही बात करनी है

कौशल्या: नरपति का दिया हुआ वचन कोई बच्चों का खेल नहीं होता रानी कैकयी

जब जी किया रखा और जब मन उकता गया तो वापस किया

(इसी समय रानी सुमित्रा मंच पर आती है और आते आते ही बोल पडती है)

सुमित्रा: राजमाता! रानी कैकयी को यदि अपना वचन वापस ही लेना था तो महाराज दशरथ को वचन पूरा करने के लि विवश करने की क्या आवश्यकता थी और यह भी स्पष्ट नहीं कि महाराज दशरथ ने अपनी एक विशेष रूप से प्रिय रानी को इस प्रकार का वचन दिया ही क्यों था? वचन देने का और वचन पूरा करने की घोषणा राजसभा में की जाती है. वचन देने से पूर्व अन्य रानियों से क्यों नहीं पूछा गया? स्वर्गीय महाराज दशरथ ने हमें को क्य नहीं सुनाया हम भी तो राजरानियां हैं

कौशल्या: यह तो सत्य है रानी सुमित्रा और यह बात राजसभा तक पहुँचनी चाहिए कि यदि अयोध्या के नरेश, राजसभ से बाहर और सभासदों से कोई परामर्श किये बिना, किस को कोई वचन देते है, तो क्या उस वचन का कोई राजनैतिक महत्व है? कोई मान्यता है..?

वचन मांगने वाले और वचन देने वाले के मध्य जो वार्तालाप हुआ वह राजकार्य के बारे में था अथवा नहीं ? इस बात की सभा में स्पष्ट चर्चा होनी चाहिए ।

जिस संकट में अयोध्यावासी और राजपरिवार घिर गये है उसका उत्तरदायित्व किस पर है ?

इस बिन्दू पर भी सभा में स्पष्ट चर्चा होनी चाहिए...कि किस षड्यंत्र के अंतर्गत महाराज दशरथ का स्वर्गवास हुआ. यह भेद भी खुलना चाहिए कि महाराज दशरथ की हत्या किसने की.

(क्रोध में भरी, रानी कैकयी की ओर देखती रहती है)

कैकयी: (कौशल्या के ये वचन सुनकर जैसे आपा खो बैठती है) मैं हत्यारन हूँ, मैं अपराधिन हूँ, मैंने महाराज को मारा है.. महामंत्री तत्काल राजसभा का आयोजन किया जाए. मैं महाराज दशरथ की मृत्यु का समस्त विवरण राजसभा में दूँगी .. सभी अयोध्यावासी सुनेंगे.. मैं अपने दुर्भाग्य की कथा सब को सुनाऊंगी.. मैं सभी मांगे हुए वचन निरस्त होंगे .. लेकिन महाराज दशरथ को वापस ले आओ.. महाराज दशरथ.. महाराज दशरथ

(रो रो कर गिर पडती है)

शत्रुघ्न: माता (कैकयी को सम्भालते हुए) अपने आप को सम्भालिये माता, आप निर्दोष हैं

सुमित्रा: राजकुमार शत्रुघ्न ! आपको कैसे पता है कि रानी कैकयी निर्दोष है?

शत्रुघ्न महाराज दशरथ ने सबके सामने प्राण त्याग दिए.. केवल माता कैकयी ही कैसे दोषी है उनकी मृत्यु की ?

सुमित्रा: यह राजकार्य की बातें अभी आपकी समझ से बाहर हैं राजकुमार

(रानी कैकयी रोती रहती है और धीरे धीरे महारानी कौशल्या के पास जाकर बिलख-बिलख कर रो पडती है महारानी कौशल्या उसे थोड़ी सांत्वना देती है और स्वयम मंच से बाहर चली जाती है... रानी सुमित्रा राजकुमार शत्रुघ्न को पकड़ कर महारानी कौशल्या के बाद उसी विंग से बाहर चली जाती है जहाँ से महारानी कौशल्या चली गयी थी...वृद्ध, अनुभवी और रघुवंश के विश्वस्त मंत्री सुमन्त्र, रानी कैकयी के पास जाकर उनके आंसू पोंछते है.. पितृ तुल्य वात्सल्य उमड़ आता है, भीगी आँखों से रानी कैकयी को देख कर चले जाते हैं... कैकयी अकेली मंच पर रोती बिलखती रह जाती है ...नेपथ्य में हृदय-विदारक स्वर लहरी उभरती है और इसके साथ-साथ प्रकाश धीरे धीरे कम होने लगता है दृश्य बदल जाता है)

दृश्य ६

(राज प्रसाद का पृष्ट भाग रानी कैकयी का मायका)

(नेपथ्य में बिना किसी अंतराल के स्वर लहरी का पिछले दृश्य के साथ जुड़ कर इस दृश्य तक चले आना ...बीच-बीच में

वायलन के उदास नोट व्यथाकुल परिवेश को और भी उभारते हैं जिससे पात्रों की मनस्थिति का पता चलता है.. प्रकाश धीरे धीरे मंच को प्रकाशित करता है. मंच के भीतरी भाग में दायीं ओर राजकुमार भरत जैसे स्वयम से रुष्ट ...दूर आकाश की ओर देखता दिखायी देते है और इसी बीच उनके नाना और नानी उन्हें देखने आते हैं)

नाना: कुमार भरत हम बहुत दिनों से अनुभव कर रहे हैं तुम्हारे व्यवहार में अचानक सा एक परिवर्तन आ गया है, क्या हम इस परिवर्तन का कारण जान सकते हैं

नानी: कारण जो भी हो हम केवल राजकुमार भरत के आश्रित ही तो जी रहे हैं यदि इस प्रकार इस के स्वभाव में अकारण परिवर्तन आता रहा तो हमारे द्वारा इस बुढ़ापे में इनकी देखभाल का क्या अर्थ है

नाना: कुमार भरत सम्भवतः कुछ नहीं कहेगा और हम भी व्याकुल होते रहेंगे

नानी: हम जानते हैं हमारे यहाँ बेटी कैकयी के अतिरिक्त और कोई सन्तान नहीं जो इस वृद्धावस्था में हमारी लाठी बन सकता. अवश्य ही हमारा दुर्भाग्य है लेकिन (रोती है) एक माँ के नाते मैं एक पुत्र की भावनाओं को समझ सकती हूँ ...कुमार के माथे पर चिंता की ऐसीं रेखाएं हमने पहले कभी नहीं देखीं

नाना: कुमार आप ही बताओ.. . हम आपके संताप को दूर करने का उपाय अवश्य करेंगे

भरत: माता

नानी: हाँ पुत्र

भरत: मुझे कोई चिंता नहीं यदि आपको मेरे अलग-थलग बैठने और इस वाटिका में दूर-दूर तक खाली आकाश को देखने से कोई असुविधा होती है तो मैं क्षमा चाहता हूँ म

नाना: यह क्या कह रहे हो..पुत्र ... कौन किससे क्षमा मांगेगा

नानी: पुत्र भरत इतने वर्षों से तुम हमारे साथ रह रहे हो हमें कोई शिकायत नहीं रही, लेकिन, अचानक तुम्हारे व्यवहार में जो परिवर्तन हमें दृष्टिगोचर हुआ है उसी ने हमे चिंतित कर रखा है.. आपके उठने-बैठने खाने-पीने और बातचीत करने में एक एक विचित्र सा परिवर्तन अनुभव हो रहा है

भरत: लेकिन माता मुझमें कोई परिवर्तन नहीं आया लेकिन (बात को पूरा नहीं करता)

नानी: लेकिन क्या वत्स

भरत: मैं स्वयं आश्चर्यचकित हूँ कि मैं व्यथित क्यों रहने लगा हूँ. मेरा मन नहीं लग रहा . कुछ खाने की इच्छा भी नहीं होती. मैं किस एक स्थान पर बैठ नहीं पाता. भीतर

ही भीतर जैसे कुछ खो सा गया है जिसे ढूंढ रहा हूँ. मेरे अंतकरण रो रहा हैं माता

नानी: न पुत्र न.. इस किशोर अवस्था में कभी-कभी ऐसा होता है. और जो अनुभव होता है वह यथार्थ से कोसों दूर होता है.

भरत: मैं (व्याकुलता में) बहुत दूर जाना चाहता हूँ

नाना: हम किस के आश्रित जियेंगे, यह भी तो सोचो!

भरत : माँ मैं क्या और किसके बारे में सोचूँ .मैं स्वयं व्याकुल हूँ. रोना चाहता हूँ (रोता है)

चिल्लाना चाहता हूँ (व्याकुलता बढ़ जाती है) मुझे वे ध्वनियाँ सुनाई दे रही हैं, जो आप नहीं सुन पा रहे. मुझे कोई बुला रहा है माँ...सुनो माँ कोई बुला रहा है मुझे. (तीव्रता से मंच के बाहर जाता है) मैं आ रहा हूँ मैं आ रहा हूँ ...(दूर-दूर तक इस आवाज़ की गूँज चली जाती है) मैं आ रहा हूँ.. मैं आ रहा हूँ

दृश्य ७.

(राजसभा के साथ में एक कक्ष . नेपथ्य संगीत में मंच धीरे-धीरे प्रकाशित हो जाता है और मंत्री सुमन्त्र जैसे पहले से ही महारानी कौशल्या के साथ वार्तालाप में

व्यस्त हों.. रानी सुमित्रा और रानी कैकयी भी उपस्थित हैं.)

सुमन्त्र: यह बात अयोध्या के इतिहास में स्पष्ट रूप से अंकित होगी की राजकुमार भरत को महाराज दशरथ के शांत होने की सूचना आज तक भी नहीं दी गयी

कौशल्या: सारी अयोध्या शोक में डूबी है... पेड़ पौधे पशु तक शोकग्रस्त से, शिर झुकाए हैं. राजभवन में किसी अधिकारी नें जल की एक बूँद भी कंठ से नीचे नहीं उतारी लेकिन (खिन्न होकर) राजकुमार भरत इस बात से अनभिज्ञ, सामान्य दिनचर्या में व्यस्त होगा बिना जाने कि उसके पिता महाराज दशरथ अब इस दुनिया में नहीं रहे (स्वर बदल कर) कितना समझाएंगे हम रानी कैकयी को.

कैकयी: राजमाता मैं सारी बातें समझती हूँ. आप के मन में कौन-कौन सी चिंताएं हैं, मैं ठीक से जानती हूँ.

सुमित्रा: यदि रानी कैकयी सब जानती हैं तो यह बात क्यों नहीं जानती की जब एक राजकुमार के पिता का देहावसान हो जाता है तो राजकुमार को अंतिम संस्कार के पूर्व ही उपस्थित रहना चाहिए. मैं जानना चाहती हूँ महारानी कौशल्या से कि राजकुमारभरत को महाराज दशरथ की

मृत्यु की सूचना से वंचित क्यों रखा गया है? इसमें क्या भेद है?

कौशल्या: मैंने राजमाता होने के नाते, रानी कैकयी से विनती की थी, कि दुःख की इस घड़ी में राजकुमार भरत की उपस्थिति बहुत आवश्यक है. लेकिन, रानी कैकयी नें राजकुमार भरत को बुलाने से मना कर किया

सुमन्त्र: महाराज दशरथ की अंतिम यात्रा में भाग न लेने के कारण कितनी बातें होती रहीं वो मैं ही जानता हूँ. महारानी कौशल्या ने राजकुमार भरत की अनुपस्थिति के विषय में व्यक्तिगत हस्तक्षेप क्यों नहीं किया, यह अयोध्या के लोग जानना चाहते हैं ? हमारी मृत्यु के बाद भी जानने का प्रयास करेंगे, कि एक पुत्र को अपने पिता की शवयात्रा में भाग लेने से जानबूझ कर वंचित रखना अपराध है, अन्याय है, मानवीयता के विरुद्ध अघोषित युद्ध है अन्याय है (रोने की नौबत तक बोलता चला जाता है) हमारे वंश की गाथा लिखने वाले हमसे उत्तर की मांग करेंगे. हमारे वंश का इतिहास औए सारी परम्पराएं समाप्त हो जाएँगी.. कौन देगा इस अक्षम्य असावधानी का उत्तर बोलिए।। (चिल्लाता है)

सुमित्रा: उत्तर वही रानी देगी, जिसने रघुवंश के संहार का षड्यंत्र रचा.

कौशल्या: वह कब उत्तर देगी. जब तक उस का उत्तर प्रज तक पहुंच पायेगा, तब तक सारी प्रजा हमसे बहुत दू चली गयी होगी. हम किस-किसको उत्तर देंगें और क्या उत्तर देंगे. रघुवंश को अंदर-अदंर ही दुःख के दीमक नें खोखला कर दिया है और हम सारे राजवंश के लोग दूर दिशाओं में भाग्य के मारों की तरह बिछड़ गये हैं.

सुमित्रा: मेरा लाड़ला पुत्र कुमार लक्ष्मण भी जंगलों में भटकने के लिए चला गया (उच्च स्वर में) आखिर क्यों? उसका दोष क्या था? हमारे भी पतिदेव होते हुए आखिर एक विशेष रानी ने क्यों महाराज दशरथ को अपनी मुट्ठी में बंद रक्खा? महाराज दशरथ क्यों उसी के साथ रथ बैठ कर विहार और आखेट करने चले जाते थे?..क्यों? हम भी तो रानियां थीं. रथ में बैठ कर हमारे बारे में महाराज दशरथ के साथ कौन-कौन सी और क्या मन्त्रणा हुयीं हम जानना चाहते हैं

कैकयी: बस कीजिये बस! राजरानियों को इतनी हल्की बातें करना शोभा नहीं देतीं. महाराज दशरथ के बाद अयोध्या की राजमाता महारानी कौशल्या है. जिस दिन राजमाता राजसभा का आयोजन करेंगी, हम उसी दिन उस सभा में उत्तर देंगे

सुमित्रा: उत्तर हमें सुनना है

कौशल्या: उन माओं को सुनना है जिनके लाडले बच्चों को तुम्हारे वचन मांगने से जंगल जाना पड़ा. उन राजकुमारों को सुनना है जिन्हें माँ की ममता और पिता के प्यार की अभी बहुत-बहुत आवश्यकता थी. उत्तर उन भाइयों को सुनना है, जो अपने समवयस्क भाइयों से दूर होकर रह गये. उन पुत्रों को सुनना है जिन पर बूढ़े पिता की देखभाल का दायित्व आन पड़ा ये सारी बातें राजवंश की गाथा से अधिक एक षड्यंत्र सी लगती है

कैकयी: राजकुमार लक्ष्मण क्यों अपने बीमार बूढ़े पिता महाराज दशरथ को छोड़ कर युवराज राम के साथ चले गये. क्यों किसने विवश किया राजकुमार को.. अपनी पत्नी उर्मिला को घर छोड़ कर जंगल क्यों पधारे लक्ष्मण ? क्या यह राजवंश की गाथा से अधिक षड्यंत्र नहीं लगता ? (ख़ामोशी) आप उत्तर क्यों नहीं देते

सुमित्रा: यह न्यायपीठ नहीं है, राज न्यायालय नहीं है, जहाँ इन बातों पर विवाद किया जा सकता है जब भेद खुलेगा, पर्दा हटेगा सभी बातें सामने आ जायेंगी और हम जान जायेंगे कि रघुवंश को दूषित करने में किसका क्या प्रयोजन था.

सुमन्त्रः (महारानी कौशल्या से) राजमाता कौशल्या, एक दूसरे प
इस तरह से दोषारोपण शोभनीय नहीं. मैंने आयुपर्यन्त
रघुवंश की सेवा में व्यतीत की, लेकिन इस सारी सेवा
के बीच मैंने राजरानियों को इस तरह से एक दूसरे पर
झपटते नहीं देखा

(दुखी होकर रोता है) यदि राजमाताओं की यही स्थिति
रही, फिर रघुवंश का पतन निश्चित है. इस सबके पहले
मेरा अंत होना चाहिए

(स्वर में पीड़ा उभर आती है) मैं इस आयु में ऐसा हृदय
विदारक दृश्य नहीं देख पा रहा. राजभवन के इस
रनिवास में एक साथ एक ही समय में तीन विधवाएँ
एक दूसरे पर झपट पड़ें यह हृदय को चीर देनेवाला दृश्य
मुझसे देखा नहीं जाता

(रोता है) मुझे आज्ञा दीजिये मैं रघुवंश के राजकीय
उत्तरदायित्व से मुक्त हो रहा हूँ सदा-सदा के लिए

(रोता है और सबकी और देख कर मंच से बाहर चला
जाता है)

सभी रानियाँ: तात (वापस बुलाने की प्रयास करती हैं) महामंत्री
सुमन्त्र.. महामंत्री सुमन्त्र

(प्रकाश धीरे-धीरे मंद पड़ जाता है.. दृश्य बदल जाता है)

दृश्य ८

(नेपथ्य में संगीत से किसी के आने के संकेत मिलते ही मंच धीरे-धारे प्रकाशित हो जाता है और शंख बजते ही लोगों का समूह एक नाटकीयता के साथ हाथों में शंख लिए एक ही लय में बजाते हुए... अयोध्या में राजकुमार भरत के आगमन से चहल-पहल हो जाती है भरत के ननिहाल से अयोध्या आने का यह दृश्य मंच की गहरायी में साइकलो रोमा के साथ-साथ दिखायी देता है और दो तरफा क्रोस लाईट इस दृश्य में और भी रंग भरते हैं प्रकाश कम होने के साथ-साथ दृश्य बदलता है)

दृश्य ९.

(राजसभा के एक भाग में महारानी कौशल्या का कक्ष)

(नेपथ्य में एक हृदय को छू लेनेवाले अलाप के साथ-साथ ही मंच प्रकाशित होने लगता है और इसी के साथ सूचक कमरे में प्रवेश करता है प्रजा के कोलाहल का प्रभाव भी नेपथ्य में सुनाई देता है)

सूचक: राजमाता... राजमाता (हांफता हुआ) राजमाता

(रानी सुमित्रा और रानी कैकयी मंच पर सामने आती हैं)

कैकयी: सूचक तुम बहुत ही व्याकुल दिख रहे हो क्या बात है

सूचक : राजमाता.. कहाँ है राजमाता ?

कैकयी और रानी सुमित्रा: ..हम भी तो राजमाताएं हैं

सूचक: राजमाता कौशल्यामाता... अयोध्यानगरी की महारानी कौशल्या माता

कैकयी: (गुस्से में आकर) हम भी तो राजमाताएं हैं चुप्प क्यों हो गये, क्या मैं राजमाता नहीं हूँ बोलो.. बोलते क्यों नहीं (चली जाती है और चलते-चलते आवाज़ देती है) महारानी कौशल्या

(रानी कैकयी के मंच से बाहर जाने के साथ ही राजमाता महारानी कौशल्या मंच पर आती है और बड़े आराम से सूचक से पूछती है)

कौशल्या: क्या समाचार लाये हो सूचक

सूचक: महारानी माता (घबराता है)

कौशल्या: क्यों क्या बात है ? क्या सूचना है ?

सूचक: महारानी राजकुमार.. राजकुमार भरत अयोध्या नगरी में प्रविष्ट हुए हैं.. उनके पीछे-पीछे अयोध्यावासियों का एक बहुत बड़ा समूह राजभवन की ओर चला आ रहा है

(महारानी कौशल्या घबरा जाती है रानी सुमित्रा के नजदीक चली जाती है)..

कौशल्या: रानी सुमित्रा

सुमित्रा: मैं आपके सामने खड़ी हूँ महारानी कौशल्या

कौशल्या: राजभवन, फिर से शोक भवन में बदलेगा रानी सुमित्रा

सुमित्रा: अर्थात, राजकुमार भरत अपने ननिहाल से वापस अयोध्या आया है

सूचक: राजकुमार भरत के साथ बहुत बड़ा लोगों का समूह है

कौशल्या: अब कहाँ गये वे लोग और राजकुमार भरत ?

सूचक: प्रतिमा भवन.. महारानी माता

सुमित्रा: राजकुमार भरत अपने पूर्वजों को प्रणाम करने प्रतिमा भवन गये होंगे

सूचक: प्रतिमा भवन में ही सारा पर्दा फाश हुआ महारानी माता

कौशल्या: हुआ क्या?

सूचक: राजकुमार भरत भवन में प्रवेश करके महाराज दिलीप, महाराज अज, महाराज रघु को चरण-वंदना करने के बाद

जब लौट रहे थे तो एक एकाएक उनकी दृष्टि जब महाराज दशरथ की प्रतिमा पर पड़ी तो वे व्याकुल होकर गिर पड़े वे क्रन्दन करने लगे सिर पीटा लिया और फूट-फूट कर रोने लगे. अयोध्यावासियों ने उन्हें अपने हाथों से उठाया और उठाकर अब वो राजभवन की ओर आ रहे हैं महारानी माता

कौशल्या: (अधिक व्याकुल हो जाती है) रानी सुमित्रा

सुमित्रा: सुन रही हूँ महारानी कौशल्या

कौशल्या: राजकुमार भरत अयोध्या नगरी आये हैं

सुमित्रा: हमारे वंश में तो जैसे दुःख और शोक ने अपना ठिकाना बना लिया है.. थमता ही नहीं

(व्याकुलता में इधर-उधर देखती है) अंततः हमनें करना क्या है महारानी

कौशल्या: राजकुमार भरत के प्रश्नों का उत्तर देना होगा

सुमित्रा: उत्तर उसकी अपनी माता रानी कैकयी देगी

कौशल्या: यदि राजकुमार मुझसे कोई सवाल पूछे मैं क्या उत्तर दूँगी (व्याकुलता को प्रदर्शित करती है)

(नेपथ्य में हृदय को छू लेनेवाली संगीत लहरी दृश्य को और भी शोकाकुल बनाती है और राजकुमार भरत के

महारानी कौशल्या के कमरे में प्रवेश का संकेत करती है. महारानी कौशल्या और रानी सुमित्रा अपने-अपने स्थान पर गहरे शोक को व्यक्त करती हैं.. राजकुमार भरत शिथिल देह को आगे करते हुए सिर झुकाए माता कौशल्या के पाँव छूते है और रानी सुमित्रा की और देख कर बिलख-बिलख कर रो पड़ते है.. रानी सुमित्रा के पाँव छूता है ..दृश्य में और भी उभार आ जाता है और कहता है)

भरत : (दोनों राजमाताओं की ओर देख कर उच्च स्वर में लगभग चिल्लाता है) शिर झुकाए क्यों खड़ी हैं, मेरी आँखों में आँखें डालकर मुझे उत्तर दीजिये.. क्या मैं रघुवंश का कुमार नहीं हूँ.. क्या मेरा पिता महाराज दशरथ नहीं थे .. क्या मैं उनका पुत्र नहीं हूँ उत्तर दीजिये ? (भरत के उग्र स्वर में चिल्लाने के साथ ही रानी कैकयी भी मंच पर निकल आती है)

मैं किस पिता का पुत्र हूँ बताओ (महारानी कौशल्या के नजदीक जाता है) यदि मैं महाराज दशरथ का पुत्र हूँ ..मुझे महाराज के देहांत की सूचना क्यों नहीं दी गयी? यह षड्यंत्र किसने रचाया ? कौन है वह दुष्ट, जिसने राजकुमार भरत को महाराज दशरथ के अंतिम दर्शन से

वंचित रखा? (चिल्लाता है) कौन है वो जिसने महाराज दशरथ को अपने पुत्र राजकुमार भरत के हाथों गंगाजल ग्रहण करने से रोका ? है कोई आप में से, जो बताये मुझे कि रघुवंश से विभक्त करके मुझे ननिहाल क्यों भेज दिया गया (रोते-रोते भावुक हो जाता है) मैं राजकुमार भरत महाराज दशरथ का चहेता पुत्र (चिल्लाता है) महाराज दशरथ अंतिम सांस लेने से पहले आपने अपने हतभाग्य पुत्र भरत को क्यों नहीं याद किया (रोता है) प्रतीक्षा क्यों नहीं की पिता महाराज दशरथ (शोक संतप्त सभी लोग रोते है) महाराज दशरथ मैं कौन सी दुर्भाग्य लेकर आपके घर में पैदा हुआ था, जो मुझे रघुकुल से उखाड़ कर बाहर फेंक दिया गया? कौन है वो राज ज्योतिषी, जिसनें मुझे कुल विनाशक कहा था? कौन है वो माता जिसने राजकुमार भरत को अशुभ कह कर अपने ही पिता की अंतिम-यात्रा में भाग लेने से रोका? कौन है वो क्रूर माँ जिसने एक पुत्र को पिता की चिता को अग्नि देने के कर्तव्य से विमुख किया ? कौन है वो पापिन जिसने मुझे पिता के अंतिम दर्शन भी नहीं करने दिए ? कौन है वो (सबों की और देखता है और रोता है) कौन है वो? तुम लोग मौन क्यों हो? प्रतिमा घर में मेरे पूर्वज चुप्प क्यों हैं? महाराज दशरथ के देहांत के कारण क्या थे? वो कब व्याधिग्रस्त हुए ? किस वैद्य ने,

उनका उपचार किया? वे शांत क्यों हो गये? मुझे उत्तर चाहिए.. उत्तर दो ? (सिर को दोनों हाथों में पकड़ कर विलाप करता है और वातावरण और भी विषादग्रस्त हो जाता है.. इस बीच मंत्री सुमन्त्र, रानी कैकयी को अपने साथ लेकर राजकुमार भरत के निकट लाता है और कहता है)

सुमन्त्र: राजकुमार भरत (दिखाता है विंग की ओर जहाँ से रानी कैकयी अंदर आती है) माता रानी कैकयी..

भरत: बस कीजिये मंत्री सुमन्त्र.. माता का नाम अपवित्र न करें .. माता जगतजननी होती है माता शक्ति और सृष्टि का रूप होती है, माता का रूप सरस्वती का रूप होता है. माता का रूप सुख, शान्ति का रूप होता है माता के आंचल में स्वर्ग होता है..जीवन को नरक बनाने वाली माँ नहीं हो सकती. मेरी माँ ने मेरे जीवन को जीते जी नर्क बना दिया है.

सुमन्त्र:... राजकुमार भरत, शान्ति से काम लीजिये

भरत: मंत्रीवर आप ही कहिये इस अशांति में मैं कैसे शांत रह सकता हूँ.. आप ही बताइए तात मैं अपने पिता का ऐसा भाग्यहीन पुत्र हूँ जिसे आनन फानन में अपने भाइयों से अलग करके अयोध्या से कोसों दूर फेंका गया... कोई बता सकता है मुझे मेरा दोष क्या था? कोई है ? (दायें

बाए देखता) जो मेरे प्रश्नों का उत्तर दे सके ? इस राजभवन में कोई ऐसी माँ है? कोई ऐसा पिता या भाई है जो मेरे विस्थापन की गुत्थी को सुलझाए? और मुझे बताये मेरे पिता समान भाई राम के अभिषेक दिवस पर मुझे क्यों नहीं बुलाया गया? यह षड्यंत्र किसने और क्यों रचा? मुझे उत्तर चाहिए..

सुमन्त्र: राजकुमार भरत मैं रानी कैकयी के मन और मन्तव्य को ठीक से जानता हूँ लेकिन इस तथ्य को समझने में असफल हूँ कि आपको महाराज दशरथ के देहांत के बारे में सूचित क्यों नहीं किया गया. मैं आश्चर्य चकित हूँ

भरत: आश्चर्य चकित तो मैं हूँ तात.. मुझे अपने पिता का अंतिम दर्शन भी नहीं करने दिया गया? मुझसे यह अधिकार किसने छीना? क्यों मुझे दूर रखा गया? (रोता है) महाराज दशरथ की आँखें अंतिम समय मेरी प्रतीक्षा में खुली तो नहीं रही होंगी... मुंह अधखुला तो नहीं रहा होगा... महाराज दशरथ...पिता श्री (विलाप) राजकुमार शत्रुघ्न.. राजकुमार शत्रुघ्न..क्या तुम्हारे मन में भी मुझे पिता श्री के निधन की सूचना भेजने का विचार तक न आया? तुम भाई नहीं तुम शत्रू हो ? रघुकुल में सब मेरे शत्रु हैं. मेरी माँ मेरी शत्रु है और ऐसी दुष्ट माताओं के लिए इस पृथ्वी पर कोई स्थान नहीं जो माँ अपने ही पुत्र

को अपने पिता से जीते जी और मर कर भी जुदा करे वो माँ इस धरती पर बोझ है और ऐसा बोझ इस धरती के सीने से हटाना होगा...

कौशल्या:(क्रोध में और राजमाता की हैसियत से बोलती है) राजकुमार भरत शोक में भी मनुष्य की मानसिक दशा संतुलित रहनी चाहिए. तुम राजकुमार हो और रानी कैकयी केवल तुम्हारी माँ ही नहीं बल्कि अयोध्या की राजरानी भी है.

भरत: और राजरानियों को ऐसे घोर पाप करने की छूट है यदि महाराज दशरथ उनके स्वामी थे, मेरे भी वो पिता थे. क्या मैं यह नहीं जान सकता कि मेरे पिता की मृत्यु किन स्थितियों में हुई? मेरे पिता महाराज दशरथ बिना किसी रोग के क्यों मृत्यु को प्राप्त हुए? क्या इस राजधानी में कोई ऐसा वैद्य है जो यह कहे कि उसने महाराज दशरथ का उपचार किया था ? है कोई जो यह स्थापित कर सके कि महाराज दशरथ किसी व्याधि से पीड़ित थे ?

सुमित्रा: (रोती है और रो रो कर बोलती है) महाराज दशरथ किसी भी व्याधि से पीड़ित नहीं थे इसके विपरीत हम सभी जन पीड़ित हैं

भरत: इस वंश में कोई पीड़ित नहीं है, कोई व्याधिग्रस्त नहीं है, अपितु व्याधि की जड हमारे वंश में प्रवेश पायी हुई है जो दीमक की तरह हम सब को भीतर भीतर से खोखला बना रही है . हमारी विचार शक्ति को चूस चूस कर शून्य कर चुकी है . तब तक यह पीड़ा हमारे वंश से समाप्त नहीं होगी जब तक न इस कुल पर दूसरी पीड़ा आन पड़े

कौशल्या और सुमित्रा: अर्थात ! (जानना चाहती हैं राजकुमार भरत का क्या तात्पर्य है)

भरत: रानी कैकयी की मृत्यु

(म्यूजिक बैंग के साथ-साथ सारे मंच पर अँधेरा छा जाता है और इसी के साथ दृश्य बदल जाता है)

दृश्य १०

(मंच प्रकाशित होते ही राजकुमार शत्रुघ्न और राजकुमार भरत एक दूसरे से जैसे पहले से ही किसी विचार विमर्श में व्यस्त हैं)

शत्रुघ्न: मैंने कौन सा पाप किया जो मैंने अंतिम संस्कार का सारा बीड़ा उठाया

भरत : था कोई इस वंश में उपस्थित महाराज दशरथ के शांत होने के समय, जो तुम्हारे साथ-साथ सारे क्रिया-कर्म का

निर्वाह करता ?... तुम्हारे सिवा कौन था उस पल ? और तुम भी तो इसी कुल के कुलदीपक हो महाराज दशरथ के राजकुमार हो ?

शत्रुघ्न : (आपा खो बैठता है) हाँ हाँ हूँ

भरत: महाराज दशरथ तुम्हारे भी पिता श्री थे ?

शत्रुघ्न: हाँ थे

भरत : तुमने ही तो महाराज दशरथ का दाह संस्कार किया ?

शत्रुघ्न: किया तो किया... क्यों मेरे जख्मों को कुरेद रहे हो राजकुमार भरत (भावुक हो जाता है)

भरत: रघुवंश के जिस राजकुमार ने भी महाराज दशरथ का अंतिम संस्कार किया होगा अयोध्यावासियों के दिलों में उस राजकुमार का मान-सम्मान बढ़ गया होगा. प्रजा उसका आदर सम्मान करती है और इस सम्मान के साथ-साथ उस राजकुमार के उत्तरदायित्व भी बड जाते हैं और उन दायित्वों में एक महाराज दशरथ के पुत्र राजकुमार भरत को भी पिता श्री के देहांत की सूचना देना था (उच्च स्वर में) क्या तुमनें इस दायित्व का निर्वाह किया (कुछ और ऊँचे स्वर में) उत्तर दो... मैं तुमसे सुनना चाहता हूँ

शत्रुघ्न: (व्याकुल हो जाता है) अर्थात

भरत: मुझे ठीक से सुनने की प्रयास करो.. क्या तुमनें महाराज दशरथ के विस्थपित पुत्र राजकुमार भरत को, महाराज के शांत होने की सूचना दी (डांटने के स्वर में) उत्तर दो.. है कोई अयोध्यावासी जो मेरे पास महाराज के देहांत की सूचना लाया हो? मैंने रघुवंश का क्या बिगाड़ा था? मैंने अयोध्यावासियों से कौन सा अन्याय किया था, जो आप लोगों ने मुझे ऐसा दंड दिया, जिसका स्मरण मुझे आयुपर्यन्त काटता रहेगा (विलाप) मुझे महाराज दशरथ चाहिए.. मुझे अपने पिता की पूरी छवि भी याद नहीं (उच्च स्वर में) प्रतिमा घर में रखी महाराज दशरथ की मूर्ती केवल प्रस्तर है .. निर्जीव मूर्ती.. मुझे मूर्ती नहीं, महाराज दशरथ चाहिए, एक पुत्र को अपने पिता का स्नेह चाहिए, हाथों की ऊष्मा चाहिए, रगों में दौड़ते हुए गर्म रक्त का उत्साह चाहिए, आँखों की गहराई चाहिए, और वंश के संस्कार चाहिए (रोता है) महाराज दशरथ या आप इस धरती पर वापस लौट आइये या अभागे पुत्र भरत को भी अपने पास बुलाइए (बिलख बिलख कर रोता है)

(महारानी कौशल्या और रानी सुमित्रा ये रोना सुनकर मंच पर दुःख से संतप्त भीतर आती हैं.. रानी सुमित्रा राजकुमार भरत को अपने पास ले आती हैं और महारानी

कौशल्या राजकुमार भरत के निकट आकर उनसे बोलती है)

कौशल्या: जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है.. जो इस जगत में आता है उसे जाना भी पड़ता है. सम्राटों के सम्राट भी इस धरती पर आये हैं और चले गये हैं, हम माताएं भी जाएंगी

भरत: (भड़क उठता है यह सुनकर) हमारे वंश में किसी माता की मृत्यु नहीं हुई. रघुवंश की माताओं नें रघुवंश का विनाश किया. महाराज दशरथ की हत्या की. भाई-भाई में भेद उत्पन्न करने के प्रयास किये गये. राजवंश की शान्ति भंग की गयी. अयोध्यावासियों के सपनों को छिन्न-भिन्न किया गया. पिता को बच्चों से अलग किया गया और बच्चों को पिता की गोद से छीन कर दूर देशों में पटक दिया गया. और वंश के लोगों के दिलों में संदेह के बीज बोये गये (बोलते बोलते स्वर उग्र हो जाता है और इसी बीच रानी कैकयी मंच पर प्रगट होती है दुःख और क्रोध से भरपूर)

कौशल्या: राजकुमार भरत माता कैकयी के पास जाकर चरण-वन्दना करो (बड़ी माँ होने के नाते बोलती है)

भरत: (क्रोध में उबाल आता है) कौन सी माता रानी कैकयी और किसकी माँ ।

कैकयी: (यह सुनकर हतोत्साहित होती है और क्रोध में भी आ जाती है) क्या मैं माँ नहीं हूँ ? क्या मैंने किसी राजकुमार को जन्म नहीं दिया है? क्या मैं महाराज दशरथ की अभागन विधवा नहीं हूँ? क्या महाराज दशरथ ने मुझसे विवाह नहीं किया था? क्या महाराज दशरथ मुझसे प्यार नहीं करते थे? बोलिए-बोलिए यह सब झूठ है.. ढोंग है। आओ अयोध्यावासियो, नगर के सबसे ऊंचे पहाड़ पर ले जाकर रानी कैकयी को फांसी पर चढ़ा दो. कर लो समाप्त रानी कैकयी के अस्तित्व को . रानी कैकयी की गाथा को मिटा दो, रामायण के हर पृष्ठ से, और लिख दो, यदि रघुवंश में कोई विनाशकारी रानी रही है तो वह केवल और केवल रानी कैकयी थी. तुम लोगों का कलेजा ठंडा हो जाएगा. सारी नगरी शांत हो जायेगी (राजकुमार भरत की और अग्रसर होते हुए चिल्लाती है) जाओ मेरी दृष्टि से दूर हो जाओ।

(महारानी कौशल्या और रानी सुमित्रा आगे आकर रानी कैकयी को सम्भालने की प्रयास करते हैं लेकिन रानी कैकयी अपने आपको उनसे छुड़ा कर आगे आकर बोलती है)

इस राजभवन और राजवंश को त्यागने से पहले मैं आप सबके सामने अपना पक्ष रखना चाहती हूँ

सुमित्रा: अपना पक्ष हमारे सामने रखने की कोई आवश्यकता नहीं! क्योंकि, हमारे मन में आपके बारे में कोई संदेह अथवा दुष्ट विचार नहीं है ।

भरत : दुष्ट विचार आपके मन में हों या न हों, इस बात का तो पता चलना ही चाहिए कि महाराज दशरथ किन कारणों से चल बसे.. हमारे पिताश्री किन परिस्थितियों से दो-चार थे, और ऐसी स्थितयों के कारण क्या थे ?

कौशल्या: राजकुमार भरत यह समय प्रश्नोत्तर का नहीं है

भरत: यही समय है उत्तर सुनने का और यदि उत्तर नहीं मिला...

कौशल्या : तो क्या होगा ?

भरत: राजभवन के हर कक्ष में यह प्रश्न हर समय सुनाई देगा और इस प्रश्न की गूँज दिन प्रतिदिन बडती जायेगी कम नहीं होगी, महारानी माता ।

सुमित्रा: और जो उत्तर रानी कैकयी देगी, क्या अयोध्या के लोग उसी उत्तर को मानेंगे? उत्तर का साक्षी कौन होगा?

कैकयी : कोष-मंत्री सुमन्त्र ।

कौशल्या और सुमित्रा: (एक साथ, प्रश्न करने की मुद्रा में) कोष-मंत्री सुमन्त्र?

(नेपथ्य में स्वर लहरी के साथ-साथ मंच पर से प्रकाश विलुप्त हो जाता है और दृश्य बदल जाता है)

दृश्य ११.

(अयोध्या के पार्श्व में एक ऐसा कच्चा मार्ग जिस पर कम ही लोग चलते हैं, एक नेत्रहीन बूढा अपनी छड़ी के आश्रित सम्भल-सम्भल कर चल रहा है और लोगों से पूछ रहा है)

नेत्रहीन बूढा: नगर वासियों मेरे लिए एक पल ठहरो । मुझे बताओ मैं कहाँ हूँ.. यह कौन सी नगरी है.. मैं बहुत दिनों से चल रहा हूँ ..मैं बस ढूंढ रहा हूँ लेकिन ... अरे भगवान के भक्तो । तुम लोग ठहरते क्यों नहीं हो.. अरे ठहरो भाई ।.. मुझे बताओ मैं किस नगरी में हूँ ? मैं एक लम्बे समय से चल रहा हूँ ...एक युग बीत गया.. लेकिन मैं उस नगरी में नहीं पहुंच पाया ..इस अंतहीन यात्रा में मेरी दृष्टि भी चली गयी ... और मेरी पत्नी भी स्वर्ग सिधारी (रोता है)

एक व्यक्ति नें मेरा हाथ थामा, अपने व्यवहार और वार्तालाप से युवां और सज्जन प्रतीत होता था, उसी ने मेरी पत्नी का दाह-संस्कार सरयू के किसी निर्जन तट पर चुपचाप किया और अस्थियों को सरयू में प्रवाहित किया ..और चला गया... अब मैं और मेरी यात्रा शेष है...इस निर्जन मार्ग

पर मुझे किसी की उपस्थिति के कोई संकेत नहीं मिल रहे... यह तो कोई शोक में डूबा नगर लगता है ..क्या नाम है इस नगर का ? कोई बोले तो .. अरे नगर वासियों ! मैं तुम्हारे नगर में वास करने नहीं आया हूँ कम से कम.. यह तो बताओ मैं कहाँ और किस नगर में हूँ ..मैं कितना अभागा हूँ, मेरे सभी संघी-साथी शांत हो गये और एक मैं ही अनिकेत निराश्रित तडपने के लिए इस संसार में रहा (रोता है) मेरे प्रभू अभी अयोध्या नगरी कितनी दूर होगी.. सुना है महाराज दशरथ वहीं के नरेश हैं ...हाँ हाँ (जैसे किसी ने सवाल पूछा हो) हाँ हाँ मुझे अयोध्या नगरी ही तो जाना है.. महाराज दशरथ के पास जाना है

(बिना कुछ कहे एक व्यक्ति उसका हाथ पकड़ता है और आगे ले जाता है)

हाँ पुत्र .. हाँ पुत्र .. ऐसे ही मेरा हाथ पकड़ कर मुझे महाराज दशरथ की बड़ी ड्योढ़ी तक ले जाओ.. राजभवन की ओर ले जाओ

(दोनों धीरे धीरे चले जाते हैं और उनके मंच से बाहर जाने के साथ ही दृश्य परिवर्तन)

दृश्य १२.

(राजभवन, अलग-थलग सा एक कक्ष, इसी कक्ष में मंत्री/कोषाध्यक्ष सुमन्त्र चिंताग्रस्त इधर-उधर टहलते दिखाई देते है. मंच धीरे-धीरे प्रकाशित हो जाता है रानी कैकयी एक अलग रूप में मंच पर आते-आते ही बोलना शुरू कर देती है)

कैकयी: मंत्री जी, राजभवन के सभी द्वार बंद कर दिए गये हैं. इसलिए आपका राजभवन से बाहर निकल पाना तब तक सम्भव नहीं जब तक न आप अयोध्या के राजपरिवार को उन स्थितियों से परिचित नहीं करायेंगे, जिन में महाराज दशरथ ने रानी कैकयी के द्वारा माँगा वचन, किसी भी समय पूरा करने का प्रण लिया था. स्वर्गीय महाराज दशरथ को साक्षी जानकर आप सविस्तार उन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए.

सुमन्त्र : (व्याकुल होकर याद करने की प्रयास करते है और नेपथ्य में शंखनाद और युद्ध का शोर और शस्त्रों के टकराने की ध्वनियाँ सुनायी देती हैं) अपनी युवावस्था में, एक बार महाराज दशरथ जब अयोध्या के बाहर, विजयन्तपुर के दक्षिणी में स्थित दण्डक वन में उत्पात मचा रहे भयानक असुर शम्बर के साथ युद्ध के लिए गये

थे, तब महारानी कैकयी भी उनके साथ थी. महाराज दशरथ ने, देवाधिपति इंद्र के पक्ष में इस युद्ध में भाग लिया था. शक्तिशाली असुर शम्बर के पास, मायावी शक्तियों के अतिरिक्त कई प्रकार के आयुध-भंडार थे. इस युद्ध में महाराज दशरथ लड़ते-लड़ते घायल हो गये थे. रानी कैकयी ने उस समय अचेतावस्था को प्राप्त महाराज दशरथ को युद्ध क्षेत्र से बाहर निकाल कर, अयोध्या की ओर प्रस्थान किया.. इसी बीच रानी कैकयी ने रथ के डोलते हुए पहिये को देख लिया था, जिसकी कील निकल चुकी थी. तब रानी कैकयी ने अपनी सूझ-बूझ, सजगता और चतुराई का परिचय देते हुए से, यात्रा भर, किसी युक्ति से उस पहिये को रथ से अलग होने से रोके रखा था, इस प्रयास में वे स्वयम भी घायल हो गयी थीं. और इस प्रकार वे महाराज दशरथ को शत्रु के घेरे से सुरक्षित बाहर निकाल कर अयोध्या लौटाने में सफल हुयी थीं.

स्वस्थ होने पर महाराज ने रानी की शौर्य-गाथा सुनी तो बहुत प्रसन्न हुए थे. उस समय महाराज दशरथ ने रानी कैकयी को दो वचन मांगने के लिए कहा था. रानी कैकयी रघुकुल की इस रीत से भली-भान्ति परिचित थीं कि प्राण भले ही त्यागने पड़ें रघुकुल में वचन भंग नहीं किया जाता. इस कारण से रानी कैकयी ने भविष्य में

किसी उचित समय के लिए इन वचनों को सुरक्षित कर लिया था.

कैकयी:(आँखों के सामने सारा दृश्य आता है और विलाप करती है) मैंने कभी भी वचन नहीं माँगा, मुझे वचन दिया गया था.

सुमंत्र : इस सन्दर्भ में एक और घटना का उल्लेख भी उचित होगा. उस दिन महाराज दशरथ रानी कैकयी के साथ गहन वन में दूर तक आखेट का पीछा करते निकल गये थे. वहां उनके बाण के द्वारा, किसी पशु के भ्रम में, एक अंधे माँ-पिता का एकमात्र पुत्र मारा गया था. यद्यपि यह पाप महाराज ने जान-बूझ कर नहीं किया था. वह युवक अपने माता पिता के लिए जल लेने नदी के तट पर आया हुआ था, उसने अपने पात्र को नदी में डुबोया तो उससे ऐसी ध्वनि हुई जैसे कोई मृग प्यास बुझा रहा हो. इसी भ्रम में महाराज ने शब्द-भेदी बाण चला दिया था. परिणाम में वह निर्दोष युवक मारा गया था. मृत युवक के माँ-पिता महाराज दशरथ को शाप दे दिया. वह एक घोर शाप था. महारानी ने तब युवक के बूढ़े माँ-पिता से हाथ जोड़ कर शाप लौटाने की बहुत विनती की थी. लेकिन, उन असहाय और नेत्रहीन माँ-पिता के मुंह से निकला हुआ घोर शाप महाराज दशरथ का पीछा करता

रहा. राजरानियों में से केवल रानी कैकयी ही शाप के इस भेद को जानती थीं. वे महाराज दशरथ को इस शाप के प्रभाव से बचाना चाहती थी. उनका हर समय, हर पल महाराज दशरथ के साथ-साथ रहने का यही कारण था.

कौशल्या : शाप क्या था ?

सुमंत्र: "महाराज दशरथ का अंत भी उसी तरह पुत्र-वियोग में हो. जिस प्रकार उसने हम असहाय नेत्रहीनों से हमारा पुत्र छीन कर हमें निपुत्र बना दिया और हमें तडप-तडप कर मरने के लिए छोड़ा" महाराज दशरथ बहुत दुखी हुए थे और रानी कैकयी इस दृश्य को देख कर हाथ मलती रह गयी थी.

कैकयी : (रोती है) मुझे लगता रहता था कि जैसे रघुवंश के सारे राजकुमार हमसे सदा-सदा के लिए दूर हो रहे हों

सुमंत्र: इस व्याकुल कर देने वाली घटना के पश्चात, अन्य किसी दिन जब हम रथ पर लौट रहे थे तो रानी कैकयी नें महाराज दशरथ को वचन याद दिलाये ..."महाराज क्या आप रानी कैकयी को दिए हुए वचन पूरा करेंगे"

भरत : तो क्या महाराज दशरथ नें वचन पूरा करने का आश्वासन दिया था.

सुमंत्र : हाँ महाराज ने 'तथास्तु' कहा था.

भरत : तो क्या महाराज ने वचन पूरा करने के परिणाम पर विचार नहीं किया

सुमंत्र : महाराज दशरथ की मनस्थिति कैसी रही होगी इस घटना-क्रम के उपरान्त, राजकुमार भरत इसका अनुमान लगाने में समर्थ हैं.

भरत : यदि महाराज दशरथ की मनस्थिति इस घटना-क्रम के पश्चात बाद इतनी व्यथित रही तो फिर तो कहना चाहिए कि महाराज अयोध्या पर शासन के योग्य नहीं रहे थे

शत्रुघ्न : हमारे पिताश्री महाराज दशरथ अयोध्या पर शासन के योग्य थे अथवा नहीं इस पर विवाद का अधिकार केवल और केवल अयोध्यावासियों का है... मंत्री जी, राजभवन वापस पहुंच कर क्या हुआ ?

भरत : जो होना था सो हुआ.. भरत को ननिहाल भेज दिया गया ताकि नेत्रहीन बूढ़े माँ-पिता का शाप उसे प्रभावित न करे.

कैकयी : (चिल्लाती है) यह झूठ है

सुमित्रा : यही सच है ...ननिहाल भेज कर केवल और केवल राजकुमार भरत की ही चिंता की गयी हमारे बालक भी तो राजपुत्र हैं महाराज दशरथ इन सभी कुमारों के पिता श्री थे.

सुमंत्र : ये सब बच्चे रघुवंश के राजकुमार हैं युवराज राम को शाप के घोर प्रभाव से बचाने के लिए ही अभिषेक समारोह में रानी कैकयी ने राजा दशरथ से वचन पूर्ती का अनुरोध किया. और युवराज राम को बनवास भेजा गया.

कौशल्या: (बहुत दुखी हो जाती है) बहुत पहले महाराज ने मुझ इस शाप से अवगत कराया तो था लेकिन, मैंने इसे गम्भीरता से नहीं लिया था.

सुमित्रा : माना कि कुमार लक्ष्मण अपने वृद्ध पिता को पीछे छोड़ कर भ्राता के मोह में राम के पीछे-पीछे चले गये लेकिन राजकुमार शत्रुघ्न को ही ...

(रानी कैकयी रो पडती है) क्यों इस शाप को भुगतने के लिए राजभवन में रखा गया.

(सब एक दूसरे को देखते रह जाते हैं और ख़ामोशी तारी हो जाती है)

शत्रुघ्न: है किसी के पास इस प्रश्न का उत्तर? कोई है जो मुझे बताये कि मैं अभी शाप के प्रभाव में हूँ या मैं मुक्त हो चुका हूँ ?

कौशल्या: (महारानी के नाते कुछ रौबीले स्वर में) यदि शाप और उनका प्रभाव सत्य है तो इस शाप के प्रभाव को स्वयम महाराज दशरथ ने प्राणत्याग कर के भोग लिया है

भरत: यदि ऐसी बात है तो युवराज राम के बनवास से घर वापस आने में क्या आपत्ति है ?

सुमित्रा: और लक्ष्मण?

भरत : १४ वर्ष की गणना किस ज्योतिष विद्‌या के अनुसार की गयी थी ? कौन थे वे राज ज्योतिषी जिन्होनें रानी कैकयी को राजकुमार राम के लिए १४ साल का बनवास मांगने का परामर्श रा दिया था ज्योतिष गणित में १४ का क्या महत्व है? ६ ९ या १८ क्यों नहीं ?

कैकयी : (भीतर ही भीतर अपराध-बोध से बहुत व्याकुल हो जाती है यह सोच कर कि उसके वचन मांगने से रघुवंश का पतन होने लगा है) बस कीजिये बस.. इस सभा में मौजूद लोगो (रोती है) १४ वर्ष का बनवास मांगने का दोष, मैं अपने शिर लेती हूँ रघुवंश के लोगों के सामने और भरी सभा में महाराज दशरथ से वचन मांगते-मांगते मेरे मुंह से किसी अज्ञात कारण से १४ दिन के स्थान पर १४ वर्ष निकल गया ..यह दोष मेरा है ..मैं दोषी हूँ ... मैं अपराधिनी हूँ कोई भी मेरे लिए कम है.

शत्रुघ्न: और जिस माता ने मुझे शाप भोगने के लिए राजभवन में ही रक्खा, उस माता को कौन सा दण्डं दिया जाए ?

कैकयी : वह दंड भी मैं ही भोगने के लिए प्रस्तुत हूँ लेकिन, तब, जब राजभवन के इस कक्ष में उपस्थित सभी सदस्य मेरी एक बात ध्यान से सुने मैंने (रोती है) यह सारा जाल केवल महाराज दशरथ की रक्षा के बुना; ताकि वे अपने बच्चों का कोई दुखद दृश्य अपनी आँखों से न देखें. इसीलिए मैंने ही राजकुमार राम और ल़क्ष्मण को बनवास भेजने का निर्णय लिया था मैं अभी राजकुमार शत्रुघ्न के बारे में सोच ही रही थी कि महाराज दशरथ ने स्वर्ग सिधार गये. हां दैव । जो सोचा भी न था, वही हुआ! मैं विधवा हो गयी (रोती है) मैंने अपने पिता को क्या, अपने पुत्र को भी सूचित नहीं किया.. मैं किसी को मुंह दिखाने के योग्य नहीं रही.

भरत: और जो पुत्र अपने पिता की मृत्यु से अनभिज्ञ रहा वह किस मुंह से अयोध्यावासियों के पास जाकर यह कहने के योग्य रहा, कि मैं महाराज दशरथ का पुत्र राजकुमार भरत हूँ (रानी कैकयी के निकट आता है) उत्तर दीजिये ?

महाराज दशरथ की चहेती रानी होने के नाते आप, १४ वर्ष के स्थान पर १४ दिवस भी कह सकती थीं. भरी सभा में

ऐसा क्यों नहीं हुआ ?... संकोच का कारण क्या था ?.. आपकी गाथा सुनकर कोई भी जागरूक व्यक्ति न आज और न आने वाले दिनों में तुम्हारी यह गाथा सुनकर प्रभावित होगा रानी... रानी कैकयी की गाथा हर युग में अधूरी रहेगी

(नेपथ्य की हृदय को छू लेनेवाली स्वर-लहरी के बीच राजभवन के दूर द्वार के साथ रक्खे हुए घडियाल की आवाज़ सुनाई देती है और मंच पर उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान उसी और केन्द्रित होता है .. हांफते कांपते सूचक मंच पर आता है)

सूचक : महारानी माता... महामहारानी महारानी कौशल्या माता

कौशल्या : क्या समाचार है सूचक

सूचक : माता एक नेत्रहीन बूढा महाराज दशरथ से मिलने आया है प्रवेश की अनुमति चाहता है

कौशल्या: मान-सम्मान के साथ हमारे समक्ष लाया जाए

(रानी सुमित्रा महारानी कौशल्या के पास जाती है सुमन्त्र राजकुमार भरत से कुछ कहने लगता है सब व्याकुल दिखाई देते हैं और इसी बीच प्रकाश विलीन हो जाता है दृश्य बदल जाता है)

दृश्य १३

(धीरे-धीरे मंच के प्रकाशित होने के साथ-साथ सभागार के पार्श्व में एक कक्ष दिखायी देता है महारानी कौशल्या, रानी कैकयी और रानी सुमित्रा, राजकुमार भरत और राजकुमार शत्रुघ्न, नेत्रहीन वृद्ध के भीतर आने की प्रतीक्षा करते हैं. नेपथ्य से, जो आने वाले दृश्य में कौतुहल और विस्मयजनक भावनाओं को उदीप्त करती हृदय-विदारक स्वर-लहरी)

सूचक : (नेत्रहीन वृद्ध का हाथ पकड़ कर उसे भीतर मंच पर ले आता है)

नेत्रहीन वृद्ध: बस.. बस पुत्र मैं कहाँ पहुंच गया हूँ ..क्या यही महाराज दशरथ का राजसभा है (एकदम से बोल उठता है) महाराज दशरथ की जय .. महाराज दशरथ की जय (कोई प्रत्युत्तर न पा कर बोलता है) पुत्र यह कौन सा स्थान है जहाँ आप मुझे ले आये हो.. यहाँ तो कोई भी नहीं.. यह तो कोई शोक-भवन जैसा लगता है, यहाँ तो जैसे चहूं ओर सन्नाटा पसरा पड़ा है (व्याकुल हो जाता है) क्या यह राजभवन नहीं है? क्या यह अयोध्या नगरी का राजभवन नहीं है ? महाराज महाराज दशरथ... आप कहाँ है (आगे चलने की प्रयास करता है और राजकुमार भरत सामने आकर खड़ा हो जाता है हाथ

पकड़ता है नेत्रहीन वृद्ध का और बड़े सुलझे हुए राजकुमार की तरह बोलता है)

भरत: आपने महाराज दशरथ के भवन में चरण रख कर इस भवन को पवित्र किया है..इसके प्रत्येक कक्ष को पवित्र किया है. आप आसन ग्रहण कीजिए और कहिये कि किस हेतूआप्का इस नगर में आगमन हुआ है. आप हमसे क्या चाहते हैं, हम आज्ञा का पालन करेंगे. किन्तु इसके पहले आप अपना परिचय दीजिये ।

नेत्रहीन वृद्ध: मैं दूर अयोध्या नगरी के सीमावर्ती क्षेत्र का निवासी हूँ ..एक अभागा पिता हूँ ...लेकिन आपका परिचय, आप कौन हैं, जो यह सब पूछ रहे हैं ?

भरत : मैं महाराज दशरथ का कुमार भरत

नेत्रहीन वृद्ध: (हांथ से लाठी गिर जाती है और आश्चर्यचकित आगे आकर पाँव छूने का प्रयास करता है)

राजकुमार...राजकुमार भरत...मैं धन्य हो गया राजकुमार... राजकुमार भरत...की जय हो (उतावला हो जाता है) मुझे महाराज दशरथ के पास ले चलो राजकुमार वे अवश्य मुझे पहचान लेंगे .. वे ही अपने दिए हुए वचन की पूर्ती करेंगे

(सभी लोग खिन्न और भावुक हो कर नेत्रहीन वृद्ध की बात को ध्यान से सुनते हैं)

कौशल्या: (आगे आकर वृद्ध से कहती है) बाबा आप आज्ञा कीजिये, कौन सा वचन पूरा करना है. मैं करूंगी... मैं महारानी कौशल्या, महाराज दशरथ का दिया हुआ वचन पूरा करूंगी ।

नेत्रहीन वृद्ध: माता.. महारानी माता.. मैं एक दुर्भाग्य का मारा पिता .. मेरी धर्मपत्नी भी अंधी थी और हमारा पालक पुत्र श्रवणकुमार...
(रानी सुमित्रा, रानी कैकयी, महारानी कौशल्या जैसे एक पहाड़ इनके सिर पर गिर आता है श्रवणकुमार नाम सुन कर)

सभी बोलते हैं: श्रवणकुमार

नेत्रहीन वृद्ध: हाँ हाँ मेरा पुत्र श्रवणकुमार, आँखों की तारा, मेरी लाठी, मेरा सहारा, देह की ऊर्जा, पालक, श्रवणकुमार। महाराज दशरथ के तीर ने उसके प्राण ले लिए थे ...उन्होनें वचन दिया था, मैं तुम्हारे पुत्र के बदले तुम्हें अपना पुत्र दूंगा... अब इस आयु में मुझे आश्रय चाहिए जो अंतीं श्वास लेते समय मेरे मुंह में गंगा जल डाल सके और मैं सहजता से प्राण त्याग कर सकूं.. कहाँ हैं

महाराज दशरथ.. महाराज को समस्त घटना क्रम स्मरण होगा (रोता है) कौन होगा मेरे साथ अंतिम समय में... किस का नाम लूं

भरत :(विश्वास दिलाते हुए) आप भरत.. राजकुमार भरत का नाम लेंगे... राजकुमार भरत आपके चरणों में होगा.. जब तक मैं जीवित रहूँगा तब तक मैं आपकी सेवा में रहूँगा मैं आपके साथ-साथ रहूँगा

नेत्रहीन वृद्ध: (आश्चर्य चकित होकर बोलता है) महाराज दशरथ ?

भरत : महाराज दशरथ अब स्वर्गलोक सिधार चुके हैं

नेत्रहीन वृद्ध: (अपने आप से जैसे बोलता है) त्राहि मां त्राहि मां कारण

भरत : पुत्र-वियोग

नेत्रहीन वृद्ध: (अपने आप से) आप न्याय के सागर हो

(राजकुमार भरत रानी कैकयी और महारानी कौशल्या की और देख कर नेत्रहीन वृद्ध का हाथ थाम लेता है और मंच से बाहर जाने लगता है ..दो कदम चल कर पीछे से आवाज़ आती है)

कैकयी : राजकुमार भरत (रुकने के लिए कहती है) और (मंच के अंदर से भी आवाज़ आती है और आवाज़ के साथ-

साथ राजकुमार शत्रुघ्न मंच पर प्रवेश करता है और राजकुमार भरत से कहता है)

शत्रुघ्न: राजकुमार भरत ठहरिये मैं भी आपके साथ चलता हूँ क्योंकि मैं नहीं चाहता महाराज दशरथ का पुनर्जन्म इस जन्म के पापों की गठरी हाथ में लिए हुए हो. मैं राजकुमार होने के नाते महाराज दशरथ के इस जन्म के पापों का निवारण करना चाहता हूँ और इसके लिए आज और अभी का यही अवसर उचित है

सुमित्रा: (रोकने की प्रयास करती है) राजकुमार शत्रुघ्न

(वृद्ध राजकुमार भरत और राजकुमार शत्रुघ्न मंच से बाहर जाने लगते हैं तो पीछे से एक स्त्री का स्वर सुनायी देती है जिसके साथ-साथ ही रघुवंश की बहु उर्मिला मंच पर आती है... रानी कैकयी, महारानी कौशल्या और रानी सुमित्रा आश्चर्यचकित हो जाती है)

उर्मिला : ठहरो (आगे आती है और सब लोगों को देख कर फिर दर्शको से मुखातिब होती है)

"मैं महाराज दशरथ की बहू ..राजकुमार लक्ष्मण की अर्धांगनी उर्मिला हूँ.. रानी कैकयी की कहानी का यही अंत नहीं है अपितु यह मेरी कहानी का प्रारम्भ है)

(इस के साथ ही सभी पात्र मंच पर पंक्तिबद्ध हो जाते हैं और पर्दा गिरता है)

***

एक नोट :

मूल कश्मीरी भाषा में, इस नाटक का मंचन, दिनांक १० दिसम्बर, २०१५, सायं ५:३० बजे, अभिनव थियेटर, जम्मू में, श्री मखनलाल सराफ के निर्देशन में सम्पन्न हुआ.

एक प्रयोग के रूप में, इस नाटक को आम वेश-भूषा में प्रस्तुत किया गया और यह प्रयोग बहुत सफल रहा !

***